

संपादकीय
मुकाबले की बड़ी सोच

यह स्वतंत्रतयोग्य कदम ही है कि प्रधानमंत्री समेत सांसदों के वेतन का तीस फीसदी हिस्सा कोरोना की महामारी से निपटने पर खर्च होगा। यह राशि एक साल तक दी जायेगी। साथ ही दो वर्ष की सांसद निधि राशि भी इसी मुकाबले के लिए उपयोग की जायेगी। वहाँ दूसरी ओर राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति व राज्यपालों ने भी स्टेचेशन से अपने वेतन का तीस फीसदी आपदा राहत कोष में देने का फैसला लिया है। संकट की इस घटी में मदद की पहल महाराष्ट्र, तेलंगाना व राजस्थान में भी हुई है। देश के सामने संकट बड़ा है और संसाधन नीमित हैं। खासकर देश में चिकित्सा सुविधाओं की स्थिति ऐसी नहीं है कि महामारी के विस्तार का मुकाबला आसानी से किया जा सके। इससे पहले देश के घोटी के उद्योगपतियों, फिल्मी सिटियों व विलासियों ने भी आपदा राहत कोष में योगदान दिया। निःसंदेह देश के जनप्रतिनिधियों की पहल से जनमानस का मनोबल बढ़ाया। मानवीयों की इस पहल का महज संकेतात्मक महत्व ही नहीं है, यह वक्त की जरूरत भी है। उनकी पहल प्रेरित करेगी कि लोग संकट की इस घटी में दिल खोलकर दान दें। देश के चिकित्सा दांचे के महेनजर पहली जरूरत यह है कि अग्रिम पांक्ति पर लड़ रहे डॉक्टरों व चिकित्सकर्मियों को पर्याप्त संख्या में जरूरी सुरक्षा आमन, उपकरण, गुणवत्ता के मास्क, आवश्यक दवाइयां तथा जीवन-ऋक्ष केंटिलेटर उपलब्ध कराये जायें। देश में जिस पैमाने पर कोरोना जांच किट उपलब्ध होने चाहिए, वह लक्ष्य हासित नहीं हो पाया है। देश की आबादी के अनुपात में अभी बड़े पैमाने पर जांच की जरूरत है। ऐसे में महामारी से लड़ने के लिए धन की कमी आड़े नहीं आनी चाहिए। संकट की इस घटी में देश के संपन्न तबके को दिल खोलकर मदद देने के लिए आगे आगा चाहिए। तभी समय रहते इस महामारी का मुकाबला हो सकेगा।

सरकार को इस वक्त कई मोर्चों पर लड़ाई लड़नी है। पहले चिकित्सा जरूरतों की पूर्ति करनी है, दूसरे समाज की उस तबके की मदद भी करनी है जो लॉकडाउन के चलते हासिये पर आ गया है। हालांकि, सरकार पौने दो लाख करोड़ के राहत पैकेज की घोषणा कर चुकी है। उम्मीद है कि सरकार फिर राहत देने की कोशिश करेगी। सरकार के इस प्रयास की विश्व स्वास्थ्य संगठन भी सहाना कर चुका है। अच्छी बात है कि देश में कोरोना वायरस की महामारी वैसी नहीं जैसे अमेरिका, चीन, ब्रिटेन, स्पेन व इटली आदि देशों में फैली है। लेकिन हमें चिंतित होना चाहिए कि संक्रमितों का आंकड़ा चार हजार पर कर चुका है और मरने वाले सो जे ज्यादा हैं। अभी भी कोरोना संक्रमितों के मामले थम नहीं रहे हैं। निःसंदेह सरकार के प्रयासों को यदि कुछ लोगों की नाकामी और अज्ञानता से पलीता न लगता तो संक्रमितों की संख्या आधी होती। यही वजह है कि केंद्र सरकार निर्धारित समय के बाद भी लॉकडाउन की स्थिति को लेकर उहाँपाँह की रिप्पित में है। बहरहाल, आज भी नागरिकों की ओर से जिम्मेदार व्यवहार की उम्मीद की जा रही है। देश की जनता ने कोरोना महामारी से लड़ने में सकारात्मक प्रतिसाद दिया है। प्रधानमंत्री के आहान पर शुरू की गई रचनात्मक पहल पर लोगों ने बह-चढ़कर हिस्सा लिया है। देश में राष्ट्रवाद का अन्त उफान देखने को मिला है। इस कड़ी में देश के नागरिकों का फर्ज है कि वे आपदा राहत कोष में अपनी सामर्थ्य के अनुसार सहयोग करें। हम जितनी ज़रूरी इस महामारी से मुक्त होंगे, उतनी ही जल्दी सामन्य जिंदगी पटरी पर आयेंगी। हालांकि, यह महामारी की लड़ाई लंबी भी चल सकती है। दूसरी ओर सरकार को भी शासन-प्रशासन के गैर-ज़रूरी खर्चों को टालना चाहिए। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि महामारी ने देश-वैश्विक आर्थिकों को बड़ी चोट दी है, जिससे उबरने में लंबा वक्त लग सकता है।



इन सबके बीच बीत्तिवुड

एकटर अभियेक बच्चन और

एकट्रेस श्रद्धा कपूर की थोड़ी

सेंटर पॉर्ट बायो टेक्नोलॉजी

इंफॉर्मेशन की मात्रा

प्रोटोकॉल के लिए उपयोग के

अनुसार, पोटेशियम की मात्रा

पुरानी प्रेशर के लिए उपयोग का

प्रयोग करने से बढ़ती है।

जहां सिद्धार्थ मर्दिनी किताबें

पढ़ने में वक्त बिता रहे हैं।

जहां सिद्धार्थ मर्दिनी किताबें

पढ़ने में वक्त बिता रहे हैं।

जहां सिद्धार्थ मर्दिनी किताबें

पढ़ने में वक्त बिता रहे हैं।

जहां सिद्धार्थ मर्दिनी किताबें

पढ़ने में वक्त बिता रहे हैं।

जहां सिद्धार्थ मर्दिनी किताबें

पढ़ने में वक्त बिता रहे हैं।

जहां सिद्धार्थ मर्दिनी किताबें

पढ़ने में वक्त बिता रहे हैं।

जहां सिद्धार्थ मर्दिनी किताबें

पढ़ने में वक्त बिता रहे हैं।

जहां सिद्धार्थ मर्दिनी किताबें

पढ़ने में वक्त बिता रहे हैं।

जहां सिद्धार्थ मर्दिनी किताबें

पढ़ने में वक्त बिता रहे हैं।

जहां सिद्धार्थ मर्दिनी किताबें

पढ़ने में वक्त बिता रहे हैं।

जहां सिद्धार्थ मर्दिनी किताबें

पढ़ने में वक्त बिता रहे हैं।

जहां सिद्धार्थ मर्दिनी किताबें

पढ़ने में वक्त बिता रहे हैं।

जहां सिद्धार्थ मर्दिनी किताबें

पढ़ने में वक्त बिता रहे हैं।

जहां सिद्धार्थ मर्दिनी किताबें

पढ़ने में वक्त बिता रहे हैं।

जहां सिद्धार्थ मर्दिनी किताबें

पढ़ने में वक्त बिता रहे हैं।

जहां सिद्धार्थ मर्दिनी किताबें

पढ़ने में वक्त बिता रहे हैं।

जहां सिद्धार्थ मर्दिनी किताबें

पढ़ने में वक्त बिता रहे हैं।

जहां सिद्धार्थ मर्दिनी किताबें

पढ़ने में वक्त बिता रहे हैं।

जहां सिद्धार्थ मर्दिनी किताबें

पढ़ने में वक्त बिता रहे हैं।

जहां सिद्धार्थ मर्दिनी किताबें

पढ़ने में वक्त बिता रहे हैं।

जहां सिद्धार्थ मर्दिनी किताबें

पढ़ने में वक्त बिता रहे हैं।

जहां सिद्धार्थ मर्दिनी किताबें

पढ़ने में वक्त बिता रहे हैं।

जहां सिद्धार्थ मर्दिनी किताबें

पढ़ने में वक्त बिता रहे हैं।

जहां सिद्धार्थ मर्दिनी किताबें

पढ़ने में वक्त बिता रहे हैं।

जहां सिद्धार्थ मर्दिनी किताबें

पढ़ने में वक्त बिता रहे हैं।

जहां सिद्धार्थ मर्दिनी किताबें

पढ़ने में वक्त बिता रहे हैं।

जहां सिद्धार्थ मर्दिनी किताबें

पढ़ने में वक्त बिता रहे हैं।

जहां सिद्धार्थ मर्दिनी किताबें

पढ़ने में वक्त बिता रहे हैं।

जहां सिद्धार्थ मर्दिनी किताबें

पढ़ने में वक्त बिता रहे हैं।

जहां सिद्धार्थ मर्दिनी किताबें

पढ़ने में वक्त बिता रहे हैं।

जहां सिद्धार्थ मर्दिनी किताबें

पढ़ने में वक्त बिता रहे हैं।

जहां सिद्धार्थ मर्दिनी किताबें

पढ़ने में वक्त बिता रहे हैं।

जहां सिद्धार्थ मर्दिनी किताबें

पढ़ने में वक्त बिता रहे हैं।

जहां सिद्धार्थ मर्दिनी किताबें

पढ़ने में वक्त बिता रहे हैं।

जहां सिद्धार्थ मर्दिनी किताबें

पढ़ने में वक्त बिता रहे हैं।

जहां सिद्धार्थ मर्दिनी किताबें